डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Page 01

विषय- संस्कृत, बी.ए. स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय वर्ष (पंचम पत्र)

वैदिक व्याकरण

① लोट् लकार परिचय
अथवा
तुमर्थ एवं क्त्वार्थ प्रत्ययों का सामान्य परिचय

लोट् लकार परिचय :-

लोट् लकार का प्रयोग आज्ञा, इच्छा, कामना तथा प्रार्थना के अर्थ में किया जाता है। इसका प्रयोग प्रायः वर्तमान काल में होता है।
यथा- छिन्धि (काट दो) आज्ञा
अहेळमानो बोधि (क्रुद्ध मत हो) इच्छा
देवाँ इह आवह (देवताओं को यहाँ ले आइए) प्रार्थना
लङ्, लिङ् तथा लुङ् के अङ्ग से लोट् के रूप बनते हैं। पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार केवल प्र० पु० एक व०, प्र० पु० ब० तथा मध्यम पु० ए० के प्रत्यय लोट् लकार के अपने हैं। उ० पु० के सब प्रत्यय लेट् और प्र० पु० द्वि०, म० पु० द्वि० तथा म० पु० ब० के प्रत्यय विधिमूलक लकार के समान होते हैं। कुछ विद्वान् विधिमूलक लकार से लोट् का विकास मानते हैं। 'लोटो लङ्वत्' सूत्र द्वारा पाणिनि ने भी अडागमरहित लङ् (जो कि विधिमूलक लकार का रूप है) और लोट् की

IND CamScanner App

classmate
Date
Page 02

समानताओं को स्वीकार किया है।

मैक्डानल के अनुसार वास्तविक लोट् लकार का प्रयोग निषेधात्मक अर्थ के साथ नहीं होता है और 'मा' के साथ तो इसका प्रयोग होता ही नहीं है। लोट् लकार के प्रत्ययों की विशेषताएँ इस प्रकार है —

① अकारान्त अङ्ग से परे प्रत्यय का पूर्ण लोप हो जाता है। उदा०- 'भृ' 'धारण करना' से भर रूप बनता है।

② पाणिनि 'सि' के स्थान पर 'हि' का आदेश करते हैं और इसे अपित् मानते हैं। (पा०- सेर्ह्यपिच्च) परन्तु 'वा छन्दसि' से वेद में 'हि' को विकल्प से अपित् मानते हैं। उदा०- गृभ्णाहि, गृभ्णीहि (अपित्)।

③ जिस अङ्ग के अन्त में 'अ' से भिन्न स्वर या व्यञ्जन आए उसके साथ वैदिक भाषा में प्रायेण 'धि' प्रत्यय का प्रयोग मिलता है। श्रु, शृणु, पृ, कृ, वृ इन धातुओं में 'हि' के स्थान पर 'धि' आदेश होता है और वह विकल्प से 'वा छन्दसि' से अङित होगा। उदा०- श्रुधि, शृणुधि, पूर्धि, कृधि, अपावृधि, युयोधि (पित्) युयुधि (अपित्)

④ क्र्यादिगण के अजन्त धातुओं के साथ 'हि' प्रत्यय जोड़ा जाता है। परन्तु हलन्त धातुओं से परे पाणिनि के अनुसार 'श्ना' विकरण के स्थान पर 'शानच्' और कहीं कहीं आय् (शायच्) होकर 'हि' का लोप हो जाता है। उदा०- पू = पुनीहि (हि) ग्रह् = गृहाण (श्ना), बधान, अशान इत्यादि, गृभ्=

IND CamScanner App

गृभाय (आय)

(5) अनेक बार लोट् के रूपों में 'हि' के स्थान पर 'तात्' का प्रयोग मिलता है। यथा- विन्तात्, कृणुतात्, पुनीतात्, गच्छतात् इत्यादि। यद्यपि पाणिनि के अनुसार 'तात्' प्रत्यय आशीर्वाद के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि भावी आदेश को प्रकट करने के लिए तात् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

(6) म०पु०ब० के कुछ रूपों में (पाणिनि के मतानुसार लोट् के और कुछ पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार विधिमूलक लकार के हैं) अपित् 'त' के स्थान पर पित् 'त' 'तनप्' तथा अपित् 'तन' का प्रयोग मिलता है। 'तनप्' और 'तन' प्रत्यय में केवल अङ्ग का भेद है। 'तन' प्रत्यय के साथ अङ्ग में गुण नहीं होता। यथा- त = जुहोत, तनप् = जुहोतन, तन = इतन।

(7) इसके अतिरिक्त 'त' के स्थान पर ही 'तात्' प्रत्यय मिलता है। यथा- कृणुतात्, पुनीतात्।

(8) आत्मनेपद में प्र०पु० के तीनों वचनों तथा म०पु० द्वि० में प्रत्यय के अन्तिम 'ए' को 'आम्' बन जाता है। ~~यथा- दुहाम्, विदाम् इत्यादि।~~ और प्रत्ययों का रूप क्रमशः ताम्, आताम्, या इताम् बन जाता है।

(9) कुछेक वैदिक रूपों में प्र०पु०ए० में 'ताम्' के स्थान पर 'आम्' प्रत्यय का प्रयोग मिलता है। यथा- दुहाम्, विदाम् इत्यादि।

IND CamScanner App

(10) मध्यम पु० ब० में 'त्वम्' के स्थान पर 'त्वात्' प्रत्यय का प्रयोग मिलता है। यथा- वारयत्वात्। मै० सं० इत्यादि में इसके स्थान पर वारयतात् रूप मिलता है।
(11) पाणिनि 'यजध्वम्' के स्थान पर 'यजध्वैनम्' निपात मानते हैं।

IND CamScanner App